“जिन्दगी बदल गयी”

कोरोना काल में लगे लॉक डाउन ने सब कुछ बदल दिया था, छोटी सी नाश्ते की दुकान थी वो भी बंद हो गयी, बचा हुआ थोडा सा पैसा था वो भी खत्म हो गया था, काम कुछ था नहीं, घर चलाना मुश्किल हो था, घर में राशन नहीं था कहीं से मिलने की उम्मीद भी नहीं थी, काफी दिनों बाद मनरेगा का कुछ काम मिला पर उससे ज्यादा दिन नहीं चल सकता था, मैं सोचती थी दुकान फिर शुरू करूँ, पर पैसे नहीं थे कि दुकान शुरू की जा

किरण पंचतिलक –अक्टूबर 2021

किरण पंचतिलक—अगस्त 2020

ग्राम भंडेरी, बैहर, बालाघाट

लोन की राशि : रु. 10,000

कुछ समझ नहीं आ रहा था, फिर मुझे पता चला सी.डी.सी. संस्था ऐसी महिलाओं का सर्वे कर रही है जो कुछ रोजगार करना चाहती हैं, मैंने भी अपना नाम लिखवा दिया और सी.डी.सी. स्टाफ ने विस्तार से मेरे साथ बात की, दुकान कैसे चलाओगी सामान कहाँ से लाओगी, क्या क्या सामान लगेगा आदि, संस्था के भैया लोग दो तीन बार आये और फिर फॉर्म भरकर ले गए, बताया कि धीरे धीरे पैसे वापस करना, मैंने सहमती दे दी, अपने पति से भी चर्चा की, अगस्त 20 में अपनी दुकान खोली और नाश्ता चाय बनाने लगी, धीरे धीरे मेरी दुकान अच्छे से चलने लगी, हमने और भी सामान रखना शुरू किया और लोन भी वापस करते रही, रोज सुबह 5 बजे उठकर होटल का सामान बनाते हैं और देर रात ही फुर्सत मिल पाती है, इस काम में पति सहयोग करते हैं| हम लोग बहुत खुश हैं मेरे तीनों बच्चे भी पढ़ रहे हैं, इस बार के लॉक डाउन में ज्यादा परेशानी नहीं हुई, अब हमारी जिन्दगी ही बदल गयी लगता है, मैं दुकान को और अधिक बढ़ाना चाहती हूँ |